ओमशांति

प्रातःक्लास पिताश्री

27.7.65 R-.तूने रात गॅवाई .....ओमशांति। बच्चे बैठे हैं नज़र लगाए। बाप भी देख रहे हैं आत्माओं को और शरीर को। बच्चे भी देख रहे हैं। देखने में मजा आता है वा सुनने में मजा आता है? क्योंकि सुनना तो बहुत हुआ। बहुत ही ज्ञान आदि तो ढेर के ढेर सुने। नम्बर वन तुम भक्त हो। तुमने ही सबसे जास्ती भक्ति की है। वेद,ग्रंथ, गीता, गायत्री,जप,तप आदि सब ;पढ़े द्ध हैं। बहुत सुने हैं। बाप समझाते हैं कब से लेकर यह सुने हैं? जब से यह निकले हैं। बहुत सुनी है। बाकी बाप से नज़र मिलाना सो अभी ही होता है। नज़र से ही निहाल होते हैं। यह एक श्लोक भी है ''नज़र से निहाल स्वामी किंदा प्यारा सतगुरू''गुरू भी है , स्वामी भी है सजनियों का। नज़र के सामने बैठे हैं। नज़र से ही बाप को जानते हो कि यह बाप है। परंतु उससे हमको विश्व का मालिकपना मिलता है। बाप को देखने से ही दिल खुश हो जाती है ; क्योंकि बाप में ही सब कुछ समाया हुआ है। बाप को जान पहचान लिया। ऐसे बाप के सामने बैठे हो। यह तो जरूर है। बाप है तो वर्सा भी जरूर है। जबकि बाप मिला , नज़र के सामने बैठे हो तो जरूर तुम बच्चों को स्वर्ग की बादशाही का नशा भी चढ़ेगा। पहले बाप का नशा, पीछे वह। पहले अल्फ फिर बे। तुम समझते हो हम बाप के पास बैठे हैं। देह अभिमान अब निकल रहा है। हम आत्माएं इस शरीर के साथ चक्कर लगाते पार्ट बजाते हैं। अब हमारा बाप भी सन्मुख बैठा है। बाप के साथ खुशी होती ही है वर्से की। बच्चे बड़े होते हैं तो बुद्धि में आता है हम बैरिस्टर का , इन्जीनियर का , बादशाह का बच्चा हूॅ। बादशाही का मालिक हूॅ। यहाॅ तुम जानते हो बाप से हमको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। स्वर्ग की स्थापना होनी है। बाप को देखने से बच्चों की स्थाई खुशी होनी चाहिए। इसको ही रूह–रिहान कहा जाता है। जो सुप्रीम बाप है सबका वो बैठ आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा इस शरीर से सुनती है। यह एक ही बार ऐसा होता है कि बाप को याद करते2 जब वो आते हैं और नज़र मिलाते हैं तो 21 जन्मों लिए वर्सा देते हैं। यह तो तुम बच्चों की बुद्धि में याद जरूर रहना चाहिए। बच्चे जो हैं वो सुनकर फिर भूल जाते हैं। भूलना ना चाहिए। आते भी हैं बाबा की नज़र के सामने होने। सनमुख होने से ही समझते हैं हम बाबा साथ बैठे हैं। बाप को देखने से ही खुशी का पारा चढ़ता है। बाबा बैठ सष्टि चक्र का राज़ समझाते हैं। भिन्न2 प्रकार से समझाते हैं कि बाप से उन्हों का पूरा लव होना चाहिए। आत्मा अपनी दिल पूरी कर दे ; क्योंकि बिछड़े हुए हैं। अनेक प्रकार के दुःख देखे हैं। अब सन्मुख बैंठे है तो देख कर आत्मा हर्षित होनी चाहिए। बाप के सन्मुख होने से ही हर्षित होते हो वा बाप से दूर होने से भी इतना हर्षितपना रहता है। विवेक कहता है बाहर में तो बहुत बाते सुनते हैं। बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह जो मधुबन में बच्चे बैठे हैं सन्मुख बाप से सुनते हैं। बाप प्यार की कशिश भी करते हैं। देखो तुम्हारा कितना मीठा प्यारा बाबा है। जानते हो बाबा हमको स्वर्ग का लायक बना रहे हैं। बच्चे थे भी स्वर्ग के मालिक। अब ड्रामाअनुसार गॅवा दिया है। राज्य गॅवाना और पाना यह तो बड़ी बात नहीं है। तुम ही इस बात को जानते हो। दुनियॉ में कितने 500 करोड़ हैं। कोटों में कोई मुझे पहचानते हैं। मैं जो हूॅ , जैसा हूॅ मेरे द्वारा क्या मिलता है यह समझते हुए भी वंडर है माया भुला देती है। शिवबाबा में पूरा लव होना चाहिए। लव कैसे बढ़े जो बाबा से ऊँच ते ऊँच लेवे। बाप कहेंगे खिदमत करो। बाप बच्चों की खिदमत करते हैं। बच्चे जानते हैं बाबा दूर देश से आया है। निश्चयबुद्धि बच्चों को कब लहर थोड़ा ना आना चाहिए। परंतु माया बड़ी जबरदस्त है। बाप तो सिंगार रहे हैं।मनुष्य को देवता बनाते हैं। यह स्कूल ही है मनुष्य से देवता बनने का। पवित्र दुनियॉ का मालिक बनने लिए ही मेहनत है। यह भी जानते हैं कि हम अपवित्र पतित हैं। बाप आए हैं हमको पावन बनाने। कहने भी हैं सिर्फ मुझे याद करो। जब मनुष्य मरते हैं तो उनको कहते है राम को याद करो। परंतु राम को जानते नहीं हैं। भल किसका भी नाम देते हैं। फलाने को याद करो। परंतु उनको कोई फायदा नहीं है। कुछ भी पहचान नहीं है। अभी तुम बाप के सन्मुख बैठे हो। पूरी पहचान है।

तुम आते ही हो शिवबाबा पास। वो तो निराकार है। क्रिएटर है। तो क्रिएशन कैसे करेंगे? प्रजापिता को भी क्रिएटर कहते हैं। ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि पैदा होती है। इसलिए प्रजापिता अर्थात् मनुष्य का पिता कहा जाता है। तुम ब्राह्मण बने हो। तुम्हारी आत्मा अब अच्छी रीत जानती है। ब्रह्मा द्वारा जानते हैं ब्रह्मा द्वारा हम बाप के बने हैं। शिव बाबा के पोत्रे प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं। यह भी जानते हो जितना शिवबाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। तुम चहते हो हमारे विकर्म विनाश हों विजयमाला में नज़दीक पिरोए जाएं । तो याद करना पड़े। फिर यह भी जानते हो कर्मयोगी हैं। कर्म तो करना ही है। घर–बार सम्भालना है। उनको सम्भालते हुए पवित्र रहना है कमल फूल समान। यह मिसाल कोई सन्यासियों से नहीं लगता है। वह गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रह नहीं सकते। ना किसको कह सकते। जो जैसा है ऐसा ही बनावेगा। सन्यासी कह ना सके कि गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहो। अगर कहें ब्रह्म को याद करो वह तो हो ना सके। कहेंगे तुमने तो घर–बार छोड़ा है। हम कैसे छोड़ेंगे?तुम ही घर–गृहस्थ में नहीं रह सकते तो दूसरों को कैसे कह सकते हो। वह राजयोग की शिक्षा दे नहीं सकते। अभी तुम सन्यासियों अथवा सभी धर्मों के राज़ को समझ गए हो। हरेक धर्म को अपने2 समय पर आना है। देवी–देवता धर्म भी अपने समय पर आने वाला है। कलियुग से फिर सतयुग होना है। सतयुग के लिए चाहिए आदि सनातन देवी–देवता धर्म। और कोई धर्म वाले हों मनुष्य को देवता बना ना सके। उनको जाना ही मुक्ति में है। सुख है ही स्वर्ग में। जब हम देवी–देवता बनें तब तो दूसरे धर्म मुक्ति में जावें। जब तक हम जीवनमुक्तिधाम स्वर्ग में ना गए हैं तब तक मुक्ति में जा नहीं सकते। स्वर्ग और नर्क इकट्ठा रह ना सके। हम जीवनमुक्ति का वर्सा पावेंगे तो जीवनबंध वाले रहने ना चाहिए। तुम जानते हो इस समय है संगम। तुम हो कल्प के संगम पर। बाप से मिलते हो दूसरे कोई मिल ना सके। दूसरे समझते हैं यह तो कलियुग है। संगम समझते नहीं। तुम समझते हो यह संगमयुग है। हम अभी कलियुग में नहीं हैं। बाप से स्वर्ग के लिए फिर से अपना वर्सा पा रहे हैं। हम जीते जी मर कर बाप के बनते हैं। एडाप्टेड जो बनते हैं उनको दोनों जहानों का मालूम पड़ता है। फलाने के थे अब फलाने के बने हैं। अपने मित्र–सम्बंधियों आदि सबको जानते हैं। दोनों तरफ का मालूम रहता है। पहले फलाने गावड़े में था। राजा नहीं था। तुम बच्चे भी जानते हो यह पतित दुनियॉ है। इनसे हमने लंगर उठा लिया है। अभी हम जा रहे हैं पावन दुनियॉ में। शांतिधाम और सुखधाम को याद कर रहे हैं। तुम जानते हो इस दुनियॉ को छोड़ना है। इससे कोई तालुक नहीं है। आत्माओं से बात करते हैं। भगवान अपने बच्चों से यानी परमपिता परमात्मा सालिग्राम बच्चों से बात कर रहे हैं। यह सन्मुख का अनुभव तुमको होता है और कोई समझ ना सके। कहते हैं भक्तों के लिए भगवान को आना है। परंतु जानते नहीं हैं बाप को ना जानने कारण मूँझ पड़ते हैं। इतनी सहज बात कोई समझ नहीं सकते। याद करते आते है। अब तुम जानते हो हम आत्मा शरीर से पार्ट बजाती हैं। हम परमधाम से आते हैं। वहॉ परमपिता भी रहते हैं। जिसको सब याद करते हैं। परंतु ना आत्मा ना परमात्मा को यथार्थ रीति जानते हैं। कैसे भगवान आकर मिलेगा क्या आकर करेगा यह भी नहीं जानते। गीता में तो सारा रॉग लिख दिया है। नाम ही बदल दिया है। बाप पूछते हैं तुम मुझे जानते हो ना। कृष्ण थोड़े ही कहेंगे तुम मुझे जानते हो। उनको तो सारी दुनियॉ जानती है। यह कोई ज्ञान दे ना सके। तो जरूर समझना चाहिए भगवान रूप बदलता है। परंतु कृष्ण नहीं बनता है। वही मनुष्य तन में आते हैं। कृष्ण के तन में नहीं आते। **यह है ब्रह्मा। है वो ही कृष्ण की आत्मा।** .....यह है कृष्ण के चौरासिवें जन्म की आत्मा जो फिर आदि में कृष्ण बनता है। अंतिम जन्म में कृष्ण पद पाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। बात कितनी गुप्त है। जरी से बात में मूँझ पड़े हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। इसमें भी बड़ी तिरकड़बाजी है। तुम समझते हो हम कृष्ण घराने में थे। हमने भी 84 जन्म लिए हैं। अब हम राजभाग ले रहे हैं परमपिता परमात्मा शिव से। कृष्ण को बुद्धि में बैठना ही नहीं है। मनुष्य

कह देते कृष्ण भगवानुवाच। कुछ भी सिद्ध होता ही नहीं।गीता में तो दिखाया है 5 पान्डव जाकर बचते हैं बस और कल्प को लाखों वर्ष दे दिया है। इतनी सहज बात भी मनुष्य नहीं जानते। बाप कितना इशारे से समझाते हैं। तुम जानते हो हम सूर्यवंशी घराने के थे। अब शूद्रवंश से ब्राह्मणवंश में आए हैं। वर्णों को भी मुख्य रखना पड़ता है। वर्सा को भी आधा कर दिया है।चोटी ब्राह्मण और शिवबाबा को भूल गए हैं। विराट रूप में बाकी देवता , क्षत्रिय , वैश्य , शूद्र दिखाए हैं। ब्राह्मण वर्ण तो जरूर चाहिए ना। ब्रह्मा की औलाद कहॉ गए कोई की बुद्धि में नहीं बैठता। तुमको बाप अच्छी रीत समझाते हैं। बुद्धि में अच्छी रीत धारणा करनी है। जब बाबा की बुद्धि में है तो तुम्हारी भी बुद्धि में रहना है। मैं तुम आत्माओं को आप समान बनाता हूँ। जो सृष्टि चक्र की नालेज मेरे में है वह तेरी बुद्धि में भी है। बुद्धिवान चाहिए । बाबा के साथ योग भी हो और घड़ी 2 विचार–सागर–मंथन करता रहे।। तुम सन्मुख बैठे हो। समझते हो बाबा तो बिल्कुल सहज समझाते हैं। क्या भूले हुए हैं ? कहते भी हैं आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल ..... सतगुरू आकर दलाल के रूप में पढ़ाते हैं। दलाल अथवा सौदा करने वाले को भी मीडीया भी कहते हैं।बाबा कहते हैं मैं मीडीया हूँ ना। बाप इन द्वारा तुमको अपना बना रहा है। मैं खुद ही तुम्हारी सगाई अपने साथ इन द्वारा करा रहा हूँ। दलाल बन अपन साथ सैदा कराते हैं। वन्डर है ना। तुम जानते हो मीडीयम को याद ना करना है। मीडीयम द्वारा हमारी सगाई होती है।सगाई शिवबाबा से होती है।तुम सब बीच वाले दलाल हो। कहते हो परमपिता परमात्मा से क्या सम्बंध है। सगाई की युक्ति रचते हो। फिर प्रजापिता का भी नाम देते हैं।वर्सा शिवबाबा से मिलता है।स्वर्ग का रचता ही वो है। बाप ने देखो कैसे दलाल बनाया है सबको। तुम्हारी धन्धा ही यह है। जीव की आत्माओं की परमात्मा साथ सगाई कराओ युक्ति से। सगाई की थी और वर्सा पाया था , फिर से पाते हो। जानते हो हमारा कल्प2 संगमयुग का ये धंधा है। और कोई आत्माओं को परमात्मा से सगाई नहीं कराते हैं। सगाई भी इनसे कराते हैं ना जो विश्व का मालिक बनाते हैं।ये सगाई सबसे बड़ी उॅच है। आत्मा को ये पक्का निश्चय हुआ है हमको बाप से स्वर्ग का वर्सा लेना है। ये है उॅच से उॅच रूहानी सगाई।हमारी धंधा ही है जीव को आत्माओं को परिचय देना आत्माओ की रुहानी सगाई करावें। रुहानी सगाई कराना कल्प2 बाप सिखलाते हैं।ये किसकी भी बुद्धि में नहीं है। कल्प2 ऐसा होता है। कल्प2 मनुष्य से देवता जरूर बनते हैं।देवता फिर मनुष्य बनते हैं। मनुष्य तो मनुष्य ही है। परन्तु क्यों लिखा है मनुष्य से देवता। क्यों ये देवी–देवता धर्म स्थापन करते हैं। तुम जानते हो इस सगाई से मनुष्य से देवता बनते हो। बरोबर क्राइस्ट से 3000वर्ष पहले भारत हेवन था। कहते हुये भी बुद्धि में नहीं आता। तुम कहते रहते हो भ्रष्टाचारी राज्य है। सतयुग में भ्रष्टाचार का नाम नहीं होता।ये तो पाप आत्माओं की दुनियॉ है भारत स्वर्ग था तो देवी देवताओं का राज्य था। कितने मंदिर आदि बनाते हैं। गवर्मेंट भी मदद करती है। अपन को इररिलीजस कहलाती है।फिर भी मदद करती रहती है मंदिर आदि बनाने में। जयन्तियॉ, त्योहार आदि कितना मनाते हैं। इन सब मनाने की दरकार ही क्या है। जब कि रिलीजन से कनेक्शन ही नहीं। इसलिए कहा जाता है तुम तो जैसे जानवर हो। हाथी , शेर का रिलीजन होता है क्या ? हैं जैसे जानवर। कहते भी ऐसे हैं। उल्लू का बच्चा , सुअर का बच्चा। रिलीजन चले जाने से जैसे जानवर बन गये हैं।कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। और ही गिरते जाते हैं। सबकी उतरती कला है। तुम जानते हो हमारी है चढ़ती कला। अब तुम चक्कर को जान गए हो। चढ़ती कला में सेकन्ड लगता है। उतरती कला में 84 जन्म लगते हैं। पहले जन्म से दूसरा लिया कला कम हो गई। बाकी अब कोई कला न रही है। फिर अब तुम्हारी चढ़ती कलाएं होती हैं।

तुम्हारी चढ़ती कला से सबका भला हो जाता है। तुम सर्विस पर लग जाते हो। तुम जानते हो विश्व के मालिक बनने बाप का मददगार बने हैं। बाप आय सबकी चढ़ती कला बनाता है। ड्रामाप्लेन अनुसार सब ऊपर चले जाऐंगे। सब दुःख से छूट जाएंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान सबको कर देंगे। तो सर्व का भला हुआ ना। तुम सबसे ऊपर चले जाते हो। तुम्हारी बुद्धि में सारे झाड़ का राज भी है। ड्रामा का राज भी है। तो ऐसे ज्ञान देने वाले बाप के साथ कितना मीठा सच्चा रहना चाहिए।डर रहना चाहिए। उनके साथ फिर धर्मराज तो है ही। भक्तिमार्ग में भी धर्मराज है। बुरे कर्मों का दंड देते हैं। हिसाब–किताब सबका है। ड्रामा में यह सब नॅूध है। अभी तो तुम सन्मुख हो। बाप के साथ कितना सच्चा रहना चाहिए । तब तो सच खंड के मालिक बनेंगे। इसमें सच्चाई जरूर चाहिए । छिपाना ना चाहिए। बाप साफ बात कह कह देता है। तुमने जन्म–जन्मान्तर पाप किए हैं। जानते हो माया का बनने के कारण तुम्हारी कलाएं गिरती आई हैं। अब तुम सच्चा बनो। जो सच्चा रहेगा उनको सचखंड की राजाई मिलेगी। सच्चा साहब राजी होगा। बाप राजी होता है ना। यह बहुत अच्छी सर्विस करते हैं।यह बहुत अच्छा मददगार है। कितना मददगार है हमारा। कहते हैं बच्चे घर 2 में हास्पिटल , कालेज खोलते जाओ। बाप का परिचय देते जाओ।तो बिचारों का कल्याण हो जाए। बहुत बच्चे हैं जो अपने घर में क्लास चला रहे हैं। B.K.की क्या दरकार है। मुरली से तुम पढ़ा सकते हो। घर में आपे ही क्यों नहीं पढ़ते हो? B.K.तो तुम भी हो ना। तुम ऐसे क्यों समझते हो हम B.K. बिगर समझा नहीं सकते? ऐसे थोड़े ही B.K.जाए तो प्राण निकल जाए। B.K.पिछाड़ी इतना मरना ना चाहिए। 7 रोज भट्ठी में रहने से पूरा अविनाशी सर्जन बन सकते हैं। बिल्कुल ही सहज है। अच्छा , कोई सेन्टर से B.K.चली आई, तो क्या इतना दिन जो सुना है सो दूसरे कान से निकल गया जो तुम सेन्टर नहीं चला सकते हो। बाबा समझते हैं डल हेड बुद्धि है। अपनी आबरू गॅवाते हैं।ऐसे बहुत हैं जो B.K.से भी तीखे हो जाते हैं आपस में क्लास चलाय। छोटे 2 गॉव वाले भी कहते हैं हमको अच्छी B.K.दो। इतना आवेंगी कहां से ? एक सेन्टर पर एक टीचर से 12 मास में 10–12 टीचर तैयार हो जानी चाहिए। क्या बुद्धि में नहीं बैठता है जो अपने घर में सेन्टर नहीं खोल सकते?बहुत निकलनी चाहिए। देखने में आता है बड़े सयाने हैं। घर में सेन्टर खोल सकते हैं। बोर्ड लगा देना है। परिचय देना है। समझाना है बरोबर बाप से तो स्वर्ग का वर्सा मिला था , फिर से अब मिल रहा है।बड़ी बात तो है नहीं। प्रजापिता और शिव के परिचय से पता पड़ता है B.K.तो ठीक है। प्रजापिता होने से जैसे मोहर लग जाती है। सब जानते हैं यह पिता है। बरोबर रचना रचते है। नाम भी त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते हैं। ब्राह्मण जरूर चाहिए। फिर विष्णु से देवताएं भी चाहिए। बरोबर ब्राह्मण से देवता बनते हैं। बाकी शंकर का कोई काम होता नहीं। वह ना ब्राह्मण है, ना देवता है। बाकी तब क्या है ? बस ऑख खोली विनाश कर देना। इसलिए निमित्त रखा है। यह काम शंकर का है। हम थोड़े ही कुछ करते हैं। ऐसे ना समझे कि बाप विनाश करते हैं। यह तो अच्छा ही है ना। शंकर द्वारा भी अच्छा काम कराते हैं। सबकी शरीर छुड़ाए शान्तिधाम में भेज देते हैं। विनाश के बाद है ही शान्तिधाम। नाटक बड़ा अच्छा बना हुआ है।यह बेहद का अनादि बना हुआ नाटक है। कब बनाया? यह अनादि है। चला ही आता है।बाप कितना मीठाहै। अपनी सराहना नहीं करते हैं। मैं कितना मीठा हूॅ। बच्चे कहते हैं शिवबाबा मीठा , कितना प्यारा है।कैसे सहज रीत समझाय सुख का वर्सा देते हैं। बुद्धि में धारणा बड़ी अच्छी चाहिए और स्थाई खुशी रहनी चाहिए। जब अविनाशी पद मिलता है तब अविनाशी खुशी भी रहनी चाहिए। इस समय में तुम बहुत सेवा कर रही हो। बाकी वह सब हैं जिस्मानी सेवा वाले। तुम ही रूहानी सेवा वाले। रूहानी सेवा एक ही बार होती है।गाया भी जाती है ज्ञान अंजन गुरू दिया .....बरोबर । अविनाशी सर्जन आते हैं तो भारत स्वर्ग हो जाता है।नईदुनियॉ की स्थापना करना यह तो बाप की काम है।अच्छा ,मातपिता तथा बापदादा का मीठे 2 सिकीलधे बच्चों प्रति याद प्यार और गुडमार्निंग। ऊँ